Gyan Manthan
Journal homepage: www.gyanmanthan.org ISSN: **3108-3455**

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन संयोजन: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में मूल्य निष्ठ शिक्षा एवं डिजिटल समावेशी शिक्षा एक शोधात्मक अध्ययन

श्रीमती साधना चौहान[1] , डॉ.राजीव पांड्या[2]
शोधार्थी,शिक्षा शास्त्र,अध्ययनशाला , सम्राट विक्रमादित्य विश्वविद्यालय,उज्जैन
प्राचार्य, शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय,उज्जैन,मध्यप्रदेश

शोध आलेख सारांश

आधुनिक युग विज्ञान, तकनीकी विकास एवं वैश्वीकरण का युग है, जहाँ शिक्षा का स्वरूप निरंतर परिवर्तनशील होता जा रहा है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था ने ज्ञान-विज्ञान एवं व्यावसायिक दक्षता के क्षेत्र में अभूतपूर्व उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, किन्तु इसके समानांतर नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं मानवीय संवेदनाओं का क्षरण भी तीव्र गति से हुआ है। आज शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य प्रायः रोजगार, प्रतिस्पर्धा एवं आर्थिक सफलता तक सीमित दिखाई देता है, जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में आत्मानुशासन, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे जीवन-मूल्यों का अभाव परिलक्षित होता है। ऐसी परिस्थितियों में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन अत्यंत आवश्यक एवं समयानुकूल प्रतीत होता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा मानव जीवन को समग्रता से देखने वाली एक शाश्वत चिंतनधारा है। वेद, उपनिषद, भगवद्गीता, रामायण, बौद्ध एवं जैन दर्शन, योग, आयुर्वेद तथा गुरु-शिष्य परंपरा भारतीय शिक्षा-दर्शन के ऐसे आधार स्तंभ हैं, जिनका उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक उत्कर्ष को सुनिश्चित करना रहा है। भारतीय संस्कृति में शिक्षा को "सा विद्या या विमुक्तये" के आदर्श से जोड़ा गया है, अर्थात् शिक्षा वह है जो मनुष्य को अज्ञान एवं अविवेक से मुक्त कर जीवन को सार्थक दिशा प्रदान करे। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी भारतीय चिंतन को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करने का एक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। यह नीति मातृभाषा आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास, नैतिक शिक्षा एवं भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को विशेष महत्त्व प्रदान करती है।

शोध की उपयोगिता

प्रस्तुत शोध आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता एवं उसके पुनर्संयोजन की आवश्यकता को स्पष्ट करने का प्रयास करता है। यह अध्ययन इस तथ्य को स्थापित करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान शिक्षा को मूल्यनिष्ठ एवं जीवनोपयोगी बनाने का सशक्त आधार है। मूल्याधारित शिक्षा विद्यार्थियों में नैतिक चेतना, आत्मसंयम,

सह-अस्तित्व, अनुशासन एवं सामाजिक समरसता की भावना विकसित करने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

यह शोध शिक्षकों, शोधार्थियों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा, क्योंकि इसके माध्यम से आधुनिक शिक्षण पद्धति में भारतीय जीवन-मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना के समावेश की संभावनाओं का विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही यह अध्ययन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों को व्यवहारिक धरातल पर समझने एवं लागू करने में मार्गदर्शन प्रदान करेगा। भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश शिक्षा को केवल सूचना-केंद्रित न बनाकर संस्कारप्रधान, मानवीय एवं राष्ट्रोन्मुख स्वरूप प्रदान कर सकता है।

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥
— भगवद्गीता

हिन्दी अर्थ :

श्रद्धावान, इन्द्रियों को संयम में रखने वाला और ज्ञान के प्रति समर्पित मनुष्य ज्ञान प्राप्त करता है; और ज्ञान प्राप्त करके वह शीघ्र ही परम शांति को प्राप्त हो जाता है।

भूमिका

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

भारतीय शिक्षा परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-परंपराओं में से एक रही है। वैदिक काल से लेकर तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों तक भारतीय शिक्षा का मूल उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मनुष्य के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को 'सा विद्या या विमुक्तये' के आदर्श के साथ आत्मोन्नति, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा आध्यात्मिक चेतना का माध्यम माना गया है। यहाँ ज्ञान का संबंध केवल सूचना या व्यवसाय से नहीं, बल्कि जीवन-मूल्यों, कर्तव्यबोध, सहअस्तित्व, मानवता तथा लोकमंगल से जोड़ा गया है। प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था गुरु-शिष्य परंपरा, अनुभवाधारित अधिगम, संवादात्मक शिक्षण तथा आचरण-आधारित मूल्य प्रणाली पर आधारित थी, जिसने व्यक्ति और समाज दोनों के संतुलित विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

किन्तु औपनिवेशिक काल के पश्चात भारतीय शिक्षा व्यवस्था में पाश्चात्य प्रभावों की प्रधानता बढ़ी, जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा का स्वरूप अधिक परीक्षा-केंद्रित, रोजगारोन्मुख तथा भौतिकवादी होता गया। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने वैज्ञानिक चेतना, तकनीकी दक्षता और वैश्विक दृष्टिकोण को विकसित अवश्य किया, परंतु इसके साथ-साथ नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक संवेदनशीलता तथा चरित्र-निर्माण जैसे पक्ष अपेक्षाकृत कमजोर होते गए। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य प्रायः केवल रोजगार प्राप्ति तक सीमित होता दिखाई देता है, जिसके कारण विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धात्मक तनाव, नैतिक विचलन, सामाजिक असंवेदनशीलता और सांस्कृतिक विस्मृति जैसी समस्याएँ उभर रही हैं। यही कारण है कि आज मूल्यनिष्ठ शिक्षा की आवश्यकता पहले से अधिक अनुभव की जा रही है।

इसी संदर्भ में Ministry of Education द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा व्यवस्था में एक व्यापक परिवर्तनकारी दस्तावेज के रूप में उभरकर सामने आई है। यह नीति शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन न मानकर, समग्र मानव विकास का माध्यम स्वीकार करती है। नीति में स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति, भाषाओं, परंपराओं, नैतिक मूल्यों एवं भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) के पुनर्संयोजन पर बल दिया गया है। इसमें मातृभाषा आधारित शिक्षण, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयक अध्ययन, कौशल विकास, नैतिक शिक्षा, समावेशिता तथा जीवन-कौशल जैसे आयामों को विशेष महत्व प्रदान किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का एक प्रमुख उद्देश्य भारत को "वैश्विक ज्ञान महाशक्ति" के रूप में स्थापित करना है। इसके लिए नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ समन्वित करने की आवश्यकता को रेखांकित करती है। नीति में यह स्वीकार किया गया है कि भारतीय शिक्षा की मूल आत्मा उसके सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों में निहित है। इसी कारण नीति भारतीय भाषाओं, योग, आयुर्वेद, दर्शन, कला, संगीत, साहित्य तथा नैतिक जीवन मूल्यों को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन केवल अतीत की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि आधुनिक संदर्भों में उसकी प्रासंगिकता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है। आज जब वैश्वीकरण, तकनीकीकरण और उपभोक्तावाद के कारण शिक्षा में मानवीय मूल्यों का संकट उत्पन्न हो रहा है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन-केंद्रित एवं मूल्यपरक शिक्षा का एक सशक्त विकल्प प्रस्तुत करती है। भारतीय चिंतन 'वसुधैव कुटुम्बकम् सर्वे भवन्तु सुखिनः' तथा 'लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु' जैसे आदर्शों के माध्यम से विश्वबंधुत्व, सहिष्णुता और मानवीय संवेदना का संदेश देता है। यह दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा व्यवस्था को अधिक मानवीय, नैतिक और समावेशी बनाने में सहायक हो सकता है।

मूल्यनिष्ठ शिक्षा का आशय केवल नैतिक उपदेशों तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में सत्यनिष्ठा, अनुशासन, सहानुभूति, कर्तव्यपरायणता, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करना है। भारतीय शिक्षा परंपरा में शिक्षा और संस्कार को परस्पर पूरक माना गया है। वर्तमान समय में बढ़ती हिंसा, भ्रष्टाचार, मानसिक तनाव, सामाजिक असहिष्णुता तथा पर्यावरणीय संकट जैसी समस्याएँ इस तथ्य की ओर संकेत करती हैं कि शिक्षा में मूल्यपरक आयामों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी दिशा में मूल्याधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

यह शोध "आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं मूल्यनिष्ठ शिक्षा के संदर्भ में" इस तथ्य का अध्ययन करेगा कि किस प्रकार भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल तत्त्व आधुनिक शिक्षा में पुनर्स्थापित किए जा सकते हैं तथा वे विद्यार्थियों के नैतिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक और सामाजिक विकास में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। यह अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा के मध्य समन्वय स्थापित करने की संभावनाओं, चुनौतियों तथा प्रभावों का

विश्लेषण करेगा। साथ ही, यह भी विवेचना की जाएगी कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मूल्यनिष्ठ शिक्षा के संवर्धन में किस प्रकार प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

अतः यह शोध न केवल शिक्षा के भारतीय स्वरूप की पुनर्स्थापना की आवश्यकता को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी प्रतिपादित करता है कि आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय, नैतिक एवं जीवनोपयोगी बनाने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन अत्यंत आवश्यक है। यही पुनर्संयोजन शिक्षा को केवल रोजगारपरक न बनाकर राष्ट्रनिर्माण एवं चरित्रनिर्माण का प्रभावी माध्यम बना सकता है।

आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन

1. पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश

विद्यालय एवं विश्वविद्यालय स्तर पर वेद, उपनिषद, दर्शन, योग, आयुर्वेद, भारतीय गणित, ज्योतिष, साहित्य एवं कला-संस्कृति से संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए। भारतीय वैज्ञानिकों एवं दार्शनिकों जैसे आर्यभट्ट, चरक, सुश्रुत, पाणिनि, पतंजलि आदि के योगदान को शिक्षण सामग्री का भाग बनाया जाए। नैतिक एवं मूल्याधारित कथाओं, लोकपरंपराओं तथा भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण पक्षों को शिक्षा में स्थान दिया जाए।

2. मूल्यनिष्ठ शिक्षा को अनिवार्य बनाना

शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुख न रखकर चरित्र-निर्माण से जोड़ा जाए। विद्यार्थियों में सत्य, अहिंसा, अनुशासन, करुणा, सहिष्णुता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का विकास किया जाए। "वसुधैव कुटुम्बकम्" एवं "सर्वे भवन्तु सुखिनः" जैसे भारतीय आदर्शों को व्यवहारिक शिक्षा से जोड़ा जाए।

3. मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन

प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा या स्थानीय भाषा में प्रदान की जाए, जैसा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तावित है। संस्कृत एवं अन्य भारतीय भाषाओं के अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए। भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण अध्ययन सामग्री एवं शोध कार्य विकसित किए जाएँ।

4. गुरु-शिष्य परंपरा के मूल तत्वों का समावेश

शिक्षक एवं विद्यार्थी के मध्य संवादात्मक एवं संस्कारात्मक संबंध स्थापित किए जाएँ। शिक्षा में केवल औपचारिक अध्यापन के स्थान पर मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं व्यक्तित्व विकास को महत्त्व दिया जाए। शिक्षकों को केवल विषय-विशेषज्ञ नहीं, बल्कि आदर्श मार्गदर्शक के रूप में विकसित किया जाए।

5. अनुभवात्मक एवं व्यवहारिक शिक्षण को बढ़ावा

भारतीय शिक्षा परंपरा के अनुसार "करके सीखने" (Learning by Doing) की पद्धति अपनाई जाए। योग, कृषि, हस्तकला, संगीत, ध्यान एवं लोककला जैसी गतिविधियों को शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ा जाए। विद्यार्थियों को सामाजिक एवं सामुदायिक कार्यों में भागीदारी हेतु प्रेरित किया जाए।

6. योग एवं ध्यान को शिक्षा का अंग बनाना

विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में नियमित योग एवं ध्यान कार्यक्रम संचालित किए जाएँ। मानसिक स्वास्थ्य, आत्मनियंत्रण एवं एकाग्रता के विकास हेतु योग शिक्षा को अनिवार्य बनाया जाए। भारतीय जीवनशैली आधारित स्वास्थ्य शिक्षा को बढ़ावा दिया जाए।

7. भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS) पर शोध को प्रोत्साहन

विश्वविद्यालयों में Indian Knowledge System (IKS) केंद्र स्थापित किए जाएँ।
आयुर्वेद, भारतीय गणित, वास्तुशास्त्र, कृषि विज्ञान, पर्यावरणीय ज्ञान आदि पर शोध को प्रोत्साहन दिया जाए। प्राचीन भारतीय ग्रंथों का आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अध्ययन एवं पुनर्व्याख्या की जाए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डिजिटल शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) भारतीय शिक्षा व्यवस्था को आधुनिक, तकनीकी एवं समावेशी बनाने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है। इस नीति में डिजिटल शिक्षा (Digital Education) को शिक्षा सुधार का प्रमुख आधार माना गया है। कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा की आवश्यकता ने डिजिटल शिक्षण के महत्त्व को और अधिक स्पष्ट किया। इसी कारण नीति में तकनीक आधारित शिक्षण, ई-लर्निंग एवं डिजिटल संसाधनों के विकास पर विशेष बल दिया गया है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY PEER-REVIEWED JOURNAL

1. education.gov.in

डिजिटल शिक्षा को शिक्षा सुधार का आधार बनाना NEP 2020 शिक्षा में तकनीक के समावेशन को आवश्यक मानती है। शिक्षा को समय एवं स्थान की सीमाओं से मुक्त करने का प्रयास किया गया है। ऑनलाइन एवं मिश्रित शिक्षण (Blended Learning) को बढ़ावा दिया गया है। उदाहरण कोविड-19 के दौरान विद्यालय एवं विश्वविद्यालयों में Google Meet, Zoom एवं Microsoft Teams के माध्यम से ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की गईं।

2. National Educational Technology Forum

(NETF) की स्थापना नीति में National Educational Technology Forum (NETF) स्थापित करने का प्रस्ताव है। इसका उद्देश्य शिक्षा में तकनीकी नवाचार, डिजिटल संसाधनों एवं अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। (education.gov.in) उदाहरण NETF शिक्षकों एवं संस्थानों को नई तकनीकों के उपयोग संबंधी दिशा-निर्देश प्रदान करेगा।

3. DIKSHA Portal का विकास

DIKSHA (Digital Infrastructure for Knowledge Sharing) प्लेटफॉर्म को डिजिटल शिक्षा का प्रमुख माध्यम बनाया गया। इसमें ई-पुस्तकें, वीडियो व्याख्यान, अभ्यास सामग्री एवं शिक्षक प्रशिक्षण

सामग्री उपलब्ध है। (diksha.gov.in) उदाहरण विद्यार्थी मोबाइल ऐप के माध्यम से कक्षा 1 से 12 तक की अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

4. SWAYAM एवं ऑनलाइन पाठ्यक्रम

नीति में Massive Open Online Courses (MOOCs) को प्रोत्साहित किया गया है। SWAYAM प्लेटफॉर्म के माध्यम से उच्च शिक्षा एवं कौशल आधारित पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जा रहे हैं। (swayam.gov.in) उदाहरण विश्वविद्यालयों के विद्यार्थी ऑनलाइन प्रमाणपत्र एवं डिप्लोमा पाठ्यक्रम कर सकते हैं।

5. वर्चुअल लैब एवं डिजिटल प्रयोगशालाएँ

विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के लिए Virtual Labs विकसित करने पर बल दिया गया है। इससे विद्यार्थी ऑनलाइन प्रयोग एवं प्रायोगिक अध्ययन कर सकते हैं।
उदाहरण इंजीनियरिंग एवं विज्ञान के विद्यार्थी कंप्यूटर आधारित प्रयोगशालाओं में प्रयोग कर सकते हैं।

6. मिश्रित शिक्षण (Blended Learning)

नीति पारंपरिक कक्षा शिक्षण एवं डिजिटल शिक्षण के संयोजन को बढ़ावा देती है। इससे शिक्षण अधिक लचीला एवं प्रभावी बनता है। उदाहरण विद्यालय में अध्यापक द्वारा पढ़ाए गए विषय को विद्यार्थी घर पर डिजिटल वीडियो के माध्यम से पुनः समझ सकते हैं।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

7. डिजिटल साक्षरता (Digital Literacy)

विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने पर बल दिया गया है। डिजिटल उपकरणों एवं इंटरनेट के प्रभावी उपयोग का प्रशिक्षण दिया जाएगा। उदाहरण विद्यालयों में कंप्यूटर शिक्षा एवं इंटरनेट उपयोग संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम।

8. शिक्षक प्रशिक्षण में तकनीक का उपयोग

शिक्षकों को डिजिटल शिक्षण पद्धतियों का प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गई है।
ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। (ncte.gov.in) उदाहरण शिक्षक Google Classroom, Smart Board एवं Learning Apps का उपयोग सीख रहे हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा का समविलयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) का एक प्रमुख उद्देश्य ऐसी शिक्षा व्यवस्था विकसित करना है जिसमें समाज के प्रत्येक वर्ग को समान अवसर प्राप्त हो। नीति "Inclusive and Equitable

Education for All" अर्थात् "सभी के लिए समावेशी एवं समान शिक्षा" पर विशेष बल देती है। इसका आशय है कि जाति, लिंग, भाषा, आर्थिक स्थिति, भौगोलिक परिस्थिति या दिव्यांगता के कारण कोई भी विद्यार्थी शिक्षा से वंचित न रहे।

1.समान अवसर की व्यवस्था

NEP 2020 प्रत्येक विद्यार्थी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने पर बल देती है। नीति का उद्देश्य शिक्षा में असमानताओं को कम करना है। सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों (SEDGs) को विशेष प्राथमिकता दी गई है। उदाहरण यदि किसी ग्रामीण क्षेत्र की आर्थिक रूप से कमजोर छात्रा विद्यालय छोड़ने की स्थिति में है, तो छात्रवृत्ति, निःशुल्क पुस्तकें एवं डिजिटल सहायता देकर उसे शिक्षा से जोड़े रखना समावेशी शिक्षा का उदाहरण है।

2.सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्ग (SEDGs) पर विशेष ध्यान

NEP 2020 ने निम्न वर्गों को SEDGs (Socio-Economically Disadvantaged Groups) में शामिल किया है—

अनुसूचित जाति (SC)
अनुसूचित जनजाति (ST)
अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)
अल्पसंख्यक वर्ग
दिव्यांग विद्यार्थी
ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थी
ट्रांसजेंडर एवं बालिकाएँ उदाहरण जनजातीय क्षेत्रों में स्थानीय भाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा छात्रावास सुविधा देना समावेशी शिक्षा का व्यवहारिक रूप है।

GYAN MANTHAN
A MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

3. दिव्यांग विद्यार्थियों का समावेशन

नीति RPWD Act 2016 के अनुरूप दिव्यांग विद्यार्थियों को सामान्य विद्यालयों में शिक्षा देने पर बल देती है। विशेष शिक्षकों एवं सहायक संसाधनों की व्यवस्था का प्रावधान किया गया है। उदाहरण दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए Braille पुस्तकें एवं Screen Reader Software उपलब्ध कराना।

4. मातृभाषा आधारित शिक्षा

प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा/स्थानीय भाषा में देने की अनुशंसा की गई है। इससे ग्रामीण एवं कमजोर वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा समझने में सुविधा होती है। उदाहरण आदिवासी क्षेत्र में बच्चों को उनकी स्थानीय बोली में प्रारंभिक शिक्षा देना।

5. Gender Inclusion Fund की स्थापना

बालिकाओं एवं लैंगिक रूप से वंचित वर्गों की शिक्षा हेतु "Gender Inclusion Fund" का प्रावधान किया गया है। इसका उद्देश्य लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देना है। उदाहरण ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं के लिए छात्रावास एवं सुरक्षित परिवहन सुविधा उपलब्ध कराना।

6. डिजिटल समावेशन

नीति डिजिटल शिक्षा को समावेशी बनाने पर बल देती है। दूरस्थ क्षेत्रों तक ऑनलाइन शिक्षा पहुँचाने की व्यवस्था की गई है। उदाहरण

DIKSHA Portal के माध्यम से विद्यार्थियों को मोबाइल पर निःशुल्क अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराना।

शोध आलेख की उपयोगिता

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकीकरण एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा का स्वरूप अत्यधिक व्यवसायिक एवं रोजगारोन्मुख हो गया है, जिसके कारण नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं मानवीय संवेदनाओं का ह्रास स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसी परिस्थिति में "आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, मूल्यनिष्ठ शिक्षा, डिजिटल एवं समावेशी शिक्षा" विषय पर आधारित आलेख अत्यंत उपयोगी एवं प्रासंगिक सिद्ध होता है। यह आलेख भारतीय शिक्षा की प्राचीन परंपराओं—जैसे गुरु-शिष्य संबंध, योग, आयुर्वेद, संस्कृत, भारतीय दर्शन, नैतिकता एवं लोकमंगल की भावना—को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था के साथ समन्वित करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को केवल सूचना या रोजगार प्राप्ति का साधन न मानकर समग्र व्यक्तित्व विकास, चरित्र निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का माध्यम मानती है। नीति में भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS), मातृभाषा आधारित शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन, अनुभवात्मक अधिगम, कौशल विकास एवं नैतिक मूल्यों के समावेश पर विशेष बल दिया गया है। साथ ही, DIKSHA, SWAYAM, Virtual Labs एवं National Educational Technology Forum (NETF) जैसी पहलों के माध्यम से डिजिटल शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया है, जिससे शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला एवं तकनीकी रूप से समृद्ध बनाया जा सके। नीति समावेशी शिक्षा की अवधारणा को भी सशक्त बनाती है, जिसके अंतर्गत सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों, बालिकाओं, ग्रामीण क्षेत्रों एवं दिव्यांग विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करने पर बल दिया गया है। यह आलेख विद्यार्थियों, शिक्षकों, शोधार्थियों एवं नीति-निर्माताओं को यह समझाने में सहायक है कि भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिक तकनीक परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि पूरक हैं, और इनके समन्वय से शिक्षा को अधिक मानवीय, मूल्यनिष्ठ, समावेशी एवं जीवनोपयोगी बनाया जा सकता है। इस प्रकार यह आलेख केवल शैक्षिक विमर्श तक सीमित न रहकर भारतीय शिक्षा के सांस्कृतिक पुनर्जागरण, नैतिक पुनर्स्थापन, तकनीकी आधुनिकीकरण एवं राष्ट्रनिर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण बौद्धिक एवं सामाजिक दस्तावेज सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

अतः आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्संयोजन समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय संस्कृति, मूल्यनिष्ठ शिक्षा, डिजिटल तकनीक एवं समावेशी दृष्टिकोण के समन्वय द्वारा ऐसी शिक्षा प्रणाली स्थापित करना चाहती है, जो ज्ञान के साथ चरित्र एवं मानवता का भी विकास करे। भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा को नैतिकता, संस्कार एवं लोककल्याण से जोड़ती है, जबकि डिजिटल एवं आधुनिक शिक्षा इसे वैश्विक एवं तकनीकी रूप से सशक्त बनाती है। इस प्रकार परंपरा और आधुनिकता का संतुलित समन्वय ही भारत को पुनः ज्ञानसम्पन्न एवं संस्कारित राष्ट्र के रूप में स्थापित कर सकता है।

संदर्भ

1. भगवद्गीता। गीता प्रेस, गोरखपुर।
2. उपनिषद। चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
4. स्वामी विवेकानंद। शिक्षा पर विचार। अद्वैत आश्रम।
5. महात्मा गांधी। शिक्षा और संस्कृति। नवजीवन प्रकाशन।
6. शर्मा, रामनाथ। भारतीय शिक्षा दर्शन। आगरा।
7. अग्रवाल, जे. सी. भारतीय शिक्षा का विकास एवं समस्याएँ। दिल्ली।
8. NCERT। मूल्य शिक्षा के आयाम। नई दिल्ली।
9. DIKSHA Portal
10. SWAYAM Portal

GYAN MANTHAN
A MULITIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL